दिनांक : 21 जनवरी, 2014

स्थिरता बनाम अराजकता

– अरुण जेटली

राज्य सभा में विपक्ष के नेता

पिछला सप्ताह कुछ सीखनेवाला रहा। मुझे तीन नेताओं के भारत के दृष्टिकोण को गहराई से समझने का अवसर मिला।

एआईसीसी में राहुल गांधी का भाषण उनकी पार्टी के कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ाने के इरादे से दिया गया था। ऐसा लगता है वे दिशाहीन हैं। मौजूदा संदर्भ में प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार नहीं होने से वे मनेवौज्ञानिक दृष्टि से कमजोर हो गए हैं। उनका भाषण आक्रामक था लेकिन उसमें कोई विशेष संदेश नहीं था।

भाजपा की राष्ट्रीय परिषद की बैठक में नरेंद्र मोदी का भाषण सारगर्भित था। राजनीतिक रूख के अतिरिक्त उन्होंने इस मौके पर भारत के बारे में सकारात्मक दृष्टिकोण को रेखांकित किया। उन्होंने चर्चा का स्तर बढाया। उनके भाषण में संघीय ढांचे पर बल देने के साथ आधुनिक और मजबूत भारत के लिये उनकी सोच थी। कृषि से स्वास्थ्य क्षेत्र तक हर किसी के बारे में उनकी सोच पूरी तरह से सकारात्मक है। हर देश के पास आईआईटी, आईआईएम, और एआईआईएमएस जैसे बेहतर संस्थान होने चाहिये। भारत का कोई भी घर मूलभुत सुविधाओं के बिना नहीं रहे। भारत के 100 शहरों को जोड़ने के लिये राजमार्ग, औद्योगिक कॉरीडोर और बुलेट ट्रेन की सुविधा से परिपूर्ण स्वर्णिम चतुर्भुज से हीरक चतुर्भुज बनकर भारत की तस्वीर बदल सकता है।संसाधन पर पहला हक गरीब और वंचितों का हों। भाजपा और नरेंद्र मोदी के 2014 के अभियान के लिय यह भाषण अत्यंत महत्वपूर्ण है।

तीसरा आप की राजनीति है। इस पार्टी का जन्म पारंपरिक राजनीति के खिलाफ प्रतिक्रिया के कारण हुआ। उसने वैकल्पिक राजनीति का वादा किया। अब स्पष्ट है कि उसकी वैकल्पिक राजनीति अराजकता है। इसे आप के नेताओं ने भी माना है। जनता को उत्तेजित करने वाला नेता सामने है। लोकपाल आंदोलन के दौरान यह तर्क दिया गया कि केन्द्र सरकार की पुलिस के रूप में सीबीआई उसके नियंत्रण में नहीं छोडी जा सकती। अब वही लोग तर्क दे रहे हैं कि राज्य की पुलिस निर्वाचित प्रतिनिधियों के अधीन रहनी चाहिये। यह कहने में गुरेज नहीं है कि उसके नेताओं की सोच में शिष्टाचार का अभाव है। पार्टी ने कानून के शासन (मालवीय नगर) को नाममात्र का महत्व दिया है, उसमें राजनीतिक लापरवाही, अत्यधिक घमंड, सार्वजनिक चर्चा में शिष्टाचार का अभाव है और स्थापित प्रतिष्ठानों की उसे कोई चिंता नहीं है। वह पुलिसवालों से वर्दी उतारकर आंदोलन में भाग लेने की अपील कर रहे हैं। दो दशक पहले एक कट्टरपंथी गुट ने गणतंत्र दिवस का बहिष्कार करने का आहवान किया था। आज एक ऐसी पार्टी जो राष्ट्रीय पार्टी बनने की इच्छा रखती है, वास्तव में गणतंत्र दिवस पर गड़बड़ी पैदा करने की धमकी दे रही है। उसका आचरण संवैधानिक व्यवस्था को चुनौती देने वाला है। उसके समर्थकों में जम्मू कश्मीर के अलगाववादी और छत्तीसगढ के माओवादी शामिल हैं।

पिछले साल राज्यसभा में मुझे एक उक्ति 'अराजकता फैलाने वालों का महासंघ ' सुनने को मिली थी। मुझे शक है कि अराजक, जो मौजूदा कानून व्यवस्था में विश्वास नहीं करते और केवल अपने बारे में सोचते हैं, एक महासंघ बना सकते हैं। अब मुझे इसका उत्तर मिल गया है। दिल्ली की सडकों पर 'अराजकता फैलाने वालों का'' एक महासंघ दिखाई दे रहा है। अराजकता कभी भी वैकल्पिक राजनीति नहीं बन सकती है।

*****